१५. ज्ञान-१

दिनांक - 9/10/2011

सहअस्तित्व में अनुभव ही ज्ञान है | सहअस्तित्व में ही जीवन ज्ञान होना पाया जाता है | इसी में मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान सम्पन्न होना भी होता है | इसे सहअस्तित्व में अनुभवपूर्वक देखा गया है | सह-अस्तित्व ही मूल वस्तु है | इस क्रम में अध्ययन विधि से पारंगत होने के अर्थ में चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव किया है | मानव सदा सदा अच्छाई को सोचने वाला है | यही ज्ञानावस्था का आरंभिक लक्षण है | इसी क्रम में मानव अच्छा होने के लिये भी सोचता है | अच्छा होने के अर्थ में अनुभव ही अंतिम बिंदु मिलता है | अनुभव सह-अस्तित्व में ही होता है | प्रमाणित होने के लिये अनुभव ही एक मात्र उपाय एवं एक मात्र आधार है एवं उपलब्धि है | होने के रूप में सह-अस्तित्व आधार रूप में होना पाया जाता है | इस मुद्दे पर अच्छी तरह से अध्ययन किये हैं | सह-अस्तित्व नित्य वर्तमान, नित्य प्रभावी, नित्य प्रकटनशील है | ये तीनों कार्यक्रम बिना मनुष्य के भी होता रहता है | इसी सिद्धांत के आधार पर मानवेतर तीनो अवस्थाएं समृद्ध होते हैं |

मानव का अवतरण किसी भी धरती पर हो, इन तीनो अवस्थाओं के पश्चात ही होता है | अत्याधुनिक सोच के आधार पर दूसरे धरती पर बसने के लिये इन तीनो अवस्थाओं का समृद्ध होना आवश्यक है अन्यथा मानव के रहने योग्य नहीं होता | इसे भली प्रकार से सोचा जा सकता है, परिशीलन किया जा सकता है; क्योंकि धरती के बिना मानव का होना सम्भव नहीं है | धरती बनाना मानव के वश में नहीं है | धरती पर ही जल, वन एवं जीव जानवरों का होना व मानव का होना रहना पाया जाता है | इस क्रम में मानव अपनी सच्चाई को समझने के लिये अर्थात दायित्वों, कर्तव्यों को समझने के लिए उक्त तीनो अवस्थाओं के साथ में होता है | साथ ही मानव के साथ रहता है |

जागृति विधि से, जागृत मानव परम्परा में हर नर, नारी शुभ सोचने का अधिकार सम्पन्न होता है | जागृति, चेतना विकास मूल्य शिक्षा के आधार पर ही होती है | विकसित चेतना के बिना मानवत्व पूर्ण मानव बनता नहीं, मानवत्व के बिना देवत्व पूर्ण मानव होता नहीं, देवत्व के बिना दिव्यत्व पूर्ण मानव प्रमाणित होना सम्भव नहीं है | इस ढंग से 'चेतना विकास' एक सघन क्रम है | सर्वप्रथम मानव चेतना सहज ज्ञान एवं आचरण, पश्चात देवत्व सहज ज्ञान एवं जाग्रतिपूर्णता के रूप में दिव्य चेतना सहज अनुभव ज्ञान एवं आचरणपूर्णता | यह सब अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित होना देखा गया है | इसी क्रम में मानवत्व सहित मानव ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में जीने का अधिकार रखता है | इसके पहले जीव चेतना में जीने पर व्यक्तिवाद, समुदायवाद में जीना ही होता है | इसे हर मानव परिशीलन कर सकता है | जागृति सहज विधि से परम्परा में चेतना विकास मूल्य शिक्षा में अध्ययन से मानव में अर्हता होता है | हर मानव समझदार होना चाहता है |

किसी आयु के बाद समझदार हो गया हूँ, ऐसा भी मानता है | ऐसा प्रायः जीव चेतना क्रम में आहार, आवास, अलंकार सम्बंधित वस्तुओं के उपलब्ध होने पर, अर्हता होने पर समझदार होने का दावा करता है | सभी जीव चार विषयों के प्रति प्रसक्त रहते हैं अथवा विवश रहते हैं | मानव भी उसी प्रकार विवश रहता है | विवशता मानव के स्वत्व, स्वतंत्रता का विरोधी रहता है | इसे मानव अनुभव कर सकता है, परिशीलन कर सकता है | इससे पता चलता है कि मानव का स्वत्व, स्वतंत्रता का अधिकार

विकसित चेतना के साथ ही है | विकसित चेतना विधि से ही मानवत्व, देवत्व, दिव्यत्व प्रकट होता है | मानव से अधिक देव मानव में, देवमानव से अधिक दिव्य मानव में क्या विशेष होता है,पूछा जा सकता है | इसके उत्तर में यही बनता है कि भ्रान्ताभ्रांत मानव न्याय पूर्वक जीते, तीनों एषणा सहित उपकार करता है, निर्भ्रांत देव मानव धर्म पूर्वक जीते लोकेष्णा सहित इससे अधिक उपकार करता है, जागृतिपूर्ण दिव्य मानव सत्य पुर्वक जीते एषणा मुक्त विधि से अधिकतम उपकार करता है | यही क्रम से परिवार, समाज एवं व्यवस्था में प्रमाणित होते हैं | यही क्रमश: आशा, विचार एवं इच्छा बंधन से मुक्ति का स्वरूप होना ज्ञात होता है | इसे ढंग से विकसित चेतना का अध्ययन विधि से ज्ञान, अनुभव विधि से प्रमाणित होने के रूप में स्वीकारा जा सकता है | स्वीकारने का मतलब व्यवहार में प्रमाणित होने से है |

प्रमाणित होने का तात्पर्य पीढ़ी दर पीढ़ी में प्रवाहित होने से है | विकसित चेतना विधि से जीने पर ही व्यवहार में प्रमाणित होना होता है | विकसित चेतना का प्रमाण मानवीयता, देव मानवीयता, दिव्य मानवीयता ही है | यह अनुभव मूलक सदा सदा के लिए प्रमाणित होते हैं | इस प्रकार स्पष्ट होता है कि मानव जीव चेतना में विवश होकर, अच्छाई चाहते हुए व्यक्तिवादी, समुदायवादी विधि से जीता है | इससे समग्र रूप में मानव को जीने के लिए विचार करने की आवश्यकता आ चुकी है;क्योंकि धरती बीमार हो चुकी है, प्रदूषण छा चुका है | मानव असहनीय स्थिति को तैयार कर चुका है | मानव विविध प्रकार से क्षतिग्रस्त होने की स्थिति में आ चुका है | इसी क्लेश परिहारार्थ चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव है | इसे हर नर, नारी जाँचने और आचरण करने का अधिकार सम्पन्न है | इसमें किसी का निंदा, स्तुति दोनों नहीं है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत